Food and Agriculture Organization of the United Nations

Ministry of Agriculture and Farmer's Welfare

Minister of Environment, Forest and Climate Change

GLOBAL ENVIRONMENT FACILITY
INVESTING IN OUR PLANET

"Green-Ag: Transforming Indian Agriculture for Global Environmental Benefits and the Conservation of Critical Biodiversity and Forest Landscapes"

ग्रीन-एग्रीकल्चर परियोजना

राजाजी-कॉर्बेट लैंडस्केप, उत्तराखण्ड

जैविक कृषि पद्धतियाँ

सरसों

परिचय एवं महत्व

सरसों का रबी तिलहनी फसलों में प्रमुख स्थान है। प्रदेश में अनेक प्रयासों के बाद भी सरसों के क्षेत्रफल में विशेष वृद्धि नहीं हो पा रही है। इसका प्रमुख कारण है, कि सिंचित क्षमता में वृद्धि के कारण अन्य महत्वपूर्ण फसलों के क्षेत्रफल का बढ़ना। इसकी खेती सीमित सिंचाई की दशा में अधिक लाभदायक होती है उन्नत विधियां अपनाने से उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि होती है। राई बोने का उपयुक्त समय सितम्बर के अन्तिम सप्ताह से अक्टूबर का प्रथम पखवाड़ा है। देर से बुआई करने पर माहु का प्रकोप एवं अन्य बीमारियों व कीड़ों की सम्भावना अधिक रहती है।

बीज की मात्रा : सिंचित एवं असिंचित क्षेत्रों में 5-6 किग्रा./हे.।

उन्नतशील प्रजातियाँ (सिंचित क्षेत्र)

क्र.सं.	उन्नत किस्में	पकने की अवधि (दिन)	उत्पादन क्षमता कु./हे.
1	नरेन्द्र अगेती राई-4	95-100	15-20
2	वरूणा (टाईप 59)	125-130	20-25
3	क्रान्ति	125-130	22-28
4	माया	130-135	25-28
5	पूसा बोल्ड	125-130	22-28
6	गोभी सरसों	148-152	25-28
7	उर्वसी	125-130	20-25

उन्नतशील प्रजातियाँ (असिंचित क्षेत्र)

क्र.सं.	उन्नत किस्में	पकने की अवधि (दिन)	उत्पादन क्षमता कु./हे.
1	वैभव	125-130	15-20
2	वरूणा (टाईप 59)	125-130	15-20

बुवाई विधि : सरसों बोने का उपयुक्त समय सितम्बर के अन्तिम सप्ताह से अक्टूबर का प्रथम पखवाड़ा है। बुवाई देशी हल के पीछे उथले (4-5 सेमी. गहरे) कुंड़ों में 45 सेमी. की दूरी पर करनी चाहिए। बुवाई के बाद बीज ढकने के लिये हल्का पाटा लगा देना चाहियें। असिंचित दशा में बुवाई का उपयुक्त समय सितम्बर का आखिरी पखवाड़ा है। देर से बुवाई करने पर माहूं का प्रकोप एवं अन्य कीटों एवं बीमारियों की सम्भावना अधिक रहती है।

खाद की मात्रा

खाद का उपयोग मिट्टी परिक्षण की संस्तुतियों के आधार पर किया जाना चाहिए। सिंचित क्षेत्रों में नाइट्रोजन 50 किग्रा., फास्फेट 80 किग्रा. एवं पोटाश 40 किग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग करने से अच्छी उपज प्राप्त होती है। उपरोक्त तत्वों की पूर्ति के लिये 100-120 कुन्तल सडी गोबर की खाद अथवा 50-60 कुन्तल नाडेप कम्पोस्ट खाद के साथ 2 किलो ग्राम जैव उर्वरक का उपयोग जमीन में जुताई के समय करना चाहिये। अच्छी पैदावार के लिये सीमित मात्रा में प्राकृतिक जिप्सम का उपयोग कर सकते है। पहली व दूसरी सिंचाई के साथ जीवामृत का उपयोग कर आवश्यक सूक्ष्म तत्वों की पूर्ति की जा सकती है।

निराई-गुडाई एवं छटाई : बुवाई के 10-20 दिन के अन्दर घने पौधों को निकालकर उनकी आपसी दूरी 15 सेमी. होनी चाहिए। खरपतवार नष्ट करने के लिए एक निराई-गुडाई पहली सिंचाई के बाद करें।

सिंचाई : सरसों में फूल आने तथा फलियों में दाना भरते समय खेत में नमी होनी चाहिए। अच्छी उपज के लिये समय पर सिंचाई अवश्य करें।

रोग एवं कीट नियंत्रण : सफेद रस्ट का उपचार : इस रोग की रोकथाम के लिये 8-10 ग्राम प्रति किग्रा. बीज को ट्राईकोडर्मा या सूडोमोनस से उपचारित करना चाहिए। खडी फसल में रोग की रोकथाम हेतु 2 किग्रा./हे. की दर से ट्राईकोडर्मा या सूडोमोनस का छिडकाव करें।

आरा मक्खी कीट का उपचार : नीम आयल 2-3 मिली. एक लीटर पानी में घोलकर दो बार छिड़काव करें। अथवा गौमूत्र, गोबर, वनस्पति (आंक, धतूरा, नीम पत्ती आदि) से तैयार किया गया तरल कीटनाशी 10-15 दिन के अन्तर पर छिड़काव करें।

मांहू कीट (चेपा) का उपचार : इसकी रोकथाम के लिये बिबेरिया बेसियाना या मैटाराईजियम 2 किग्रा/हे. की दर से छिड़काव करें या गौमूत्र, गोबर वनस्पति (आंक, धतूरा, नीम पत्ती आदि) से तैयार किया गया तरल कीटनाशी 10-15 दिन के अन्तर पर छिड़काव करें।

बालदार (गिडार) का उपचार : इसकी रोकथाम हेतु प्रारम्भिक अवस्था में गिडार सहित पत्तियों को तोडकर एक बाल्टी मिट्टी के तेल युक्त पानी में डाल दें, जिससे गिडार नष्ट हो जाते हैं। गिडारों की रोकथाम हेतु बिबेरिया बेसियाना 10 ग्राम एक लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें इसके अलावा नीम ऑयल या गौमूत्र, गोबर, वनस्पति (आंक, धतूरा, नीम पत्ती आदि) से तैयार किया गया तरल कीटनाशी 10-15 दिन के अन्तर पर छिड़काव करें।

चित्रित कीट (पेन्टेड बग) का उपचार : इसकी रोकथाम के लिये कीटनाशकों के द्वारा उपचार करना लाभदायक होता है।

एकीकृत नियंत्रण की विधियाँ

माहूं के प्रकोप की रोकथाम हेतु अक्टूबर के प्रथम पखवाड़े तक बुवाई कर देनी चाहिए।

1. सरसों की प्रजाति उर्वशी एवं टी-59 अगेती बुवाई करें। यह प्रजाति माहू कीट के प्रकोप से बच जाती है।

यांत्रिक नियंत्रण की विधियाँ

1. पौधों की चेंपा से प्रभावित टहनियों को दिसम्बर के अन्त तक तोड देना चाहिए।
2. कीट एवं रोग ग्रसित पत्तियों को प्रारम्भिक अवस्था में ही तोड कर नष्ट कर देना चाहिए।
3. झुण्ड़ वाले कीड़ों की सूंडियों या अण्ड़ों को इकट्ठा करके नष्ट कर देना चाहिए।

जलागम प्रबन्ध निदेशालय
उत्तराखण्ड
इन्दिरा नगर, फॉरेस्ट कालोनी, देहरादून
फोन: 0135-2768712
0135-2760170
ईमेल: wmd-ud@nic.in
वेब: www.umduk.gov.in

स्रोत : फसलों का जैविक उत्पादन एवं प्रबन्धन, जैविक खेती कार्यक्रम, कृषि विभाग, पौड़ी गढ़वाल